भगवान महावीर फाउंडेशन

उत्कृष्टता पुरस्कार

170, ट्रिप्लिकेन हाई रोड,
ट्रिप्लिकेन,
मद्रास - 600 005

भगवान महावीर फाउंडेशन

मानव-सेवा के लिए उत्कृष्टता पुरस्कार

कुछ देशवासी आर्थिक अथवा अन्य किसी भी प्रकार के लाभ की कामना किए बिना निःस्वार्थ भाव से अनेक क्षेत्रों में मानव-सेवा के कार्य में जुटे हुए हैं। ऐसे महानुभाव भौतिक संसाधनों की कमी के कारण कभी इतने निरुत्साहित नहीं होते जितने अपने द्वारा किए गए कार्यों को मान्यता न मिलने के कारण होते हैं। उनमें से कुछ तो दिशा-रहित और निराश हो चुकने के कारण प्रयत्नशील नहीं रहते और कुछ जितना चाहते हैं उतना न कर पाने के कारण उत्साहहीन हो जाते हैं।

हममें से कुछ लोग ऐसा अनुभव करते रहे हैं कि इस प्रकार की निःस्वार्थ सेवा को मान्यता मिलनी चाहिए। यह मान्यता अन्य किसी कारण से चाहे न मिले, किन्तु कम से कम ऐसे लोगों के सामने एक उदाहरण रखने के लिए अवश्य मिलनी चाहिए जो अन्धकार को कोसते रहने की बजाय, एक छोटा सा दिया जलाने भर के लिए प्रयत्नशील हैं।

फाउंडेशन, इसके लक्ष्य तथा उद्देश्य

भगवान महावीर फाउंडेशन की स्थापना सुविख्यात व्यवसायी श्री एन. सुगालचन्द जैन ने 22 अप्रैल, 1994 को एक सार्वजनिक परमार्थ न्यास के रूप में की थी।

फाउंडेशन का मुख्य उद्देश्य है मानव-सेवा के क्षेत्र में, विशेषतः अहिंसा, सत्य, शाकाहार, शिक्षा, चिकित्सा, समुदाय एवं समाज-सेवा के क्षेत्र में, उत्कृष्ट कार्य करने वाले लोगों व संस्थाओं को मान्यता, बढ़ावा

तथा संरक्षण प्रदान करना। साथ ही सार्वजनिक उपयोगिता की दृष्टि से किए जाने वाले कार्यों को, जिनका विशेष बल निर्धनों व दलितों के हित के कार्यों पर हो, को बढ़ावा देना भी फाउंडेशन का उद्देश्य है।

फाउंडेशन का उद्देश्य निर्धनों तथा विकलांगों को सहायता प्रदान करना भी है जिसमें बाढ़, सूखा, भूकम्प जैसी प्राकृतिक आपदाओं के शिकार लोगों को उचित संरक्षण व चिकित्सा-सहायता देना भी शामिल है।

पुरस्कार

फाउंडेशन ने मानव-सेवा के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्यों को बढ़ावा देने, विशेषत: उपर्युक्त कार्यों के लिए, एक पुरस्कार की शुरूआत की है।

पुरस्कार में 5 लाख रुपये की नकद राशि, प्रशस्ति पत्र तथा एक स्मृति चिह्न प्रदान किया जाता है। पुरस्कार ऐसे व्यक्ति/संस्था को दिया जाता है जिसने सम्बद्ध क्षेत्रों में विशिष्ट एवं नि:स्वार्थ सेवा की हो।

फाउंडेशन द्वारा 1995 के पुरस्कार हेतु विचारार्थ देश भर से कुल 328 नामांकन पत्र प्राप्त हुए थे।

1995 के पुरस्कार का चयन

भारत के भूतपूर्व वित्तमंत्री तथा महाराष्ट्र के भूतपूर्व राज्यपाल श्री सी. सुबमण्यम् की अध्यक्षता में बनी चयन समिति में अन्य ख्यातिप्राप्त नागरिक भी शामिल हैं।

चयन समिति की 19 अगस्त 1995 को मद्रास में आयोजित बैठक में राजगिरी, जिला नालन्दा, बिहार की समाजसेवी संस्था 'बीरायतन' का, उसके द्वारा

समाजसेवा, शिक्षा तथा एक आदिवासी क्षेत्र में किए गए विशिष्ट कार्यों को मान्यता देने के विचार से, चयन किया गया।

न्यासी

श्री एन. सुगालचन्द जैन फाउंडेशन के प्रबंध न्यासी हैं। अन्य न्यासियों में हैं - श्री जी. एन. दामाणी, श्री एस. प्रसन्नचन्द जैन तथा श्री एस. विनोदकुमार।

1995 की पुरस्कार विजेता 'वीरायतन'

वीरायतन का विचार-दर्शन है - धर्म के सिद्धान्तों का आधुनिक विज्ञान जगत के साथ ताल-मेल बैठाना। संस्था की स्थापना 1973 में प्रथम महिला जैन आचार्या श्री चन्दनाजी द्वारा की गई जिन्होंने आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक आन्दोलन की शुरुआत की और जैन धर्म के इतिहास में एक नए अध्याय का श्री गणेश किया। यह संस्था उन गिनी-चुनी संस्थाओं में से एक है जहाँ साधुओं व साध्वियों द्वारा मानव-सेवा का न केवल उपदेश दिया जाता है, अपितु उस पर व्यावहारिक आचरण भी किया जाता है। मार्ग में आने वाली बाधाओं से अविचलित लौह महिला आचार्या श्री चन्दनाजी ने अपने अथक प्रयासों, निष्ठा एवं संकल्प से ही परम पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री अमर मुनि जी महाराज के स्वप्न को साकार किया है।

आदिवासी बहुल इस क्षेत्र में सामाजिक क्रांति लाने में प्रयासरत इस संस्था ने शिक्षा, स्वास्थ्य, संस्कृति तथा ग्रामीण विकास के क्षेत्रों में समाज कल्याण के अनेकानेक कार्यक्रमों को हाथ में लिया है। इनमें एक महत् कार्य है - 'नेत्र ज्योति सेवा मन्दिरम' नाम से एक

नेत्र अस्पताल की स्थापना, जहाँ बड़ी संख्या में बहिरंग और अन्तरंग रोगियों का इलाज होता है। इस प्रकार आदिवासी क्षेत्रों की समस्याओं के समाधान द्वारा इस संस्था ने वहाँ के जन-जीवन में एक सामाजिक बदलाव ला दिया है, जिसके परिणाम स्वरूप बहुत सारे परिवारों ने मदिरापान एवं धार्मिक उत्सवों के लिए पशु-बलि जैसी अन्य कुरीतियों को त्याग दिया है।

आचार्या श्री चन्दनाजी महाराज, जो जैन इतिहास में पहली बार 'आचार्या' पद से अलंकृत हुई हैं, 'वीरायतन' की प्रेरणा शक्ति हैं। उन्हीं के सद् प्रयासों से 'वीरायतन' ने एक नए आध्यात्मिक और सांस्कृतिक आन्दोलन की शुरुआत की।

न्यास के कार्य-कलाप तथा आशाएँ

श्री सुगालचन्द जैन ने वित्तीय प्रबन्ध, उपकरण लीजिंग, फार्म और भवन स्थलों का विकास एवं विक्रय, यात्रा प्रबंध, हीरों का व्यापार जैसे अनेक व्यवसायों की शुरुआत की है।

श्री जैन ने सह न्यासियों के सहयोग से अपने धन का पर्याप्त भाग निर्धनों के कल्याणार्थ खर्च करने की अनेक योजनाएँ बनाई हैं। उन्होंने सिंघवी चैरिटेबल ट्रस्ट, जड़ावबाई नथमल सिंघवी चैरिटेबल ट्रस्ट, भगवान महावीर फाउंडेशन आदि अनेक परमार्थ ट्रस्टों की स्थापना की है जो पात्र व्यक्तियों तथा संस्थाओं को आर्थिक सहायता प्रदान करते हैं। श्री जैन के नेतृत्व में इन ट्रस्टों द्वारा अनेक कल्याणकारी योजनाएँ चलाई जा रही हैं, जैसे – सर्व साधारण को उचित दरों पर रोग-लक्षण सम्बन्धी सेवाएँ प्रदान करने वाला एक

डायग्नॉस्टिक केन्द्र, स्वास्थ्य कैम्प, नेत्र कैम्प, योग्य छात्रों को छात्रवृत्ति देने का प्रावधान, दसवीं तथा बारहवीं कक्षाओं की सरकारी परीक्षाओं में सर्वोच्च स्थान प्राप्त करने वाले मेधावी छात्रों के लिए वित्तीय पुरस्कारों का प्रावधान, छटी कक्षा से बारहवीं कक्षा तक के जरूरतमंद छात्रों को पुस्तकें और उत्तर पुस्तिकाएँ उपलब्ध कराने हेतु बुक बैंक का प्रावधान तथा मद्रास में एक उच्चतर माध्यमिक विद्यालय का संचालन। जरूरतमंद व्यक्तियों को उचित दरों पर आधुनिकतम तकनीक उपलब्ध कराने के लिए मद्रास में मद्रास इंस्टीच्यूट ऑफ मैग्नैटोबायोलॉजी के सहयोग से पल्स्ड मैग्नैटिक फील्ड थैरेपी सैंटर की स्थापना इनकी परियोजनाओं में नवीनतम है।

विकलांगों को नगण्य मूल्यों पर कृत्रिम अंग उपलब्ध कराने की एक अन्य योजना शीघ्र ही प्रारम्भ हो रही है ।

यद्यपि श्री जैन के नेतृत्व में यह ट्रस्ट निर्धनों तथा जरूरतमन्दो का स्तर सुधारने का भरसक प्रयत्न कर रहे हैं, तथापि केवल कुछ-एक व्यक्तियों के छोटे से समूह के लिए इस दिशा में बहुत कुछ कर दिखाने की क्षमताएँ सीमित ही हैं । अत: हम समाज के जागरूक वर्ग से फाउंडेशन को मुक्त हस्त से दान देने की प्रार्थना करते हैं ताकि इसके कार्य-कलाप एवं गतिविधियों के क्षेत्र का विस्तार हो सके।

ट्रस्ट को दी गई दान-राशि आय कर अधिनियम 80-G के अन्तर्गत कर-मुक्त है।

भगवान महावीर फाउंडेशन
170, ट्रिप्लिकेन हाई रोड, ट्रिप्लिकेन, मद्रास-600 005